नेपाली एवं भारतीय दान परम्परा : सांस्कृतिक एकता के सन्दर्भ में

बीज शब्द : नेपाली एवं भारतीय दान परम्परा, नेपाली दान अभिलेख, शिलालेख, भारत नेपाल संस्कृति

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

भारतीय संस्कृति में 'दान' को प्रमुख मूल्य के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। दान की परंपरा राजा एवं प्रजा, सभी के लिए श्रेय-प्रेय का साधन रहा है। भारत एवं नेपाल के शिलालेख से प्राप्त दान संबंधी साक्ष्य हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाते हैं कि प्राचीन भारतीय एवं नेपाल समाज समान रूप से दान की परंपरा में विश्वास रखता है।

सुरेशधर द्विवेदी
प्राचार्य,
नाथ चन्द्रावत महाविद्यालय जगदीशपुर,
गोरखपुर।

इन्द्रजीत मौर्य
प्रवक्ता (प्राचीन इतिहास),
पंडित हरिसहाय डिग्री कॉलेज जैती,
बेलघाट,
गोरखपुर।

नेपाल एक दक्षिण एशियाई राष्ट्र है, जो चीन के दक्षिण में स्थित है। यहाँ के 81 प्रतिशत नागरिक हिन्दू हैं। यहाँ की राष्ट्रभाषा नेपाली है। नेपाल का कुल क्षेत्रफल 147181 वर्गमीटर है जो विश्व का 91वाँ हिस्सा है। नेपाल की राजधानी काठमाण्डू है। नेपाल शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में विद्वानों में मतैक्यता का अभाव है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि नेपाल का अर्थ ऋषियों की तपस्थली है। मुनियों द्वारा पालित होने के कारण नेपाल कहलाया, परन्तु डॉ. ग्रियर्सन एवं यंग ने नेपाल की मूलजाति 'नेवार' से नेपाल की व्युत्पत्ति स्वीकार किया। नेपाल शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्राप्त होता है।

नेपाल भारत का पड़ोसी देश है जो भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दोनों पक्षों से एकरूपता का परिचायक है। दोनों संस्कृतियों के परम्परागत मूल्य और पूर्व से प्राप्त प्राकृतिक धरोहर, पुरातन इतिहास की परम्परा को निश्चित रूप से अपने प्रभाव से प्रभावित किये बिना नहीं रहती है। प्रारम्भ से ही दोनों संस्कृतियों का अध्ययन एवं विश्लेषण होता रहा है। फिर भी दोनों संस्कृतियों के परस्पर सम्बन्धों के ऐतिहासिक विवेचन की महती आवश्यकता और प्रासंगिकता वर्तमान समय में शेष है।

अष्टाध्यायी, अर्थशास्त्र, महाभाष्य, महाभारत, वृहत्संहिता, राजतरंगिणी के अनुशीलन से नेपाली संस्कृति के विविध पक्षों पर प्रकाश पड़ता है।[1] विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांतों नेपाली संस्कृति के विविध पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति में भी नेपाल के सांस्कृतिक तथा भौगोलिक क्षेत्र से सम्बद्ध सूचानाएं प्राप्त होती है। अश्वघोषकृत वज्रसूची, आचार्य मैत्रेय की प्रज्ञापारमिता टीका, आचार्य शानिदेव कृति बोधिचर्यावतार, आचार्य चन्द्रकीर्ति कृत महामायूरी, भिक्षुजिनरक्षित कृत सुभद्रावदान जैसे ग्रन्थों के द्वारा भारत एवं नेपाल की ऐतिहासिक सम्बन्धों की पर्याप्त सूचनाएँ प्राप्त होती है।[2]

भारत नेपाल सम्बन्धों में केवल राजनैतिक ही नहीं अपितु सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में भी समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। नेपाली जनमानस वेदों की सत्ता में विश्वास करता है तथा अधिकांश देवी-देवताओं एवं धार्मिक प्रवृत्तियों में भी समानता दिखायी पड़ती है। नेपाल से प्राप्त संस्कृत भाषा के आठ दानपरक अभिलेखों में भारतीय संस्कृति के अन्य पक्षों के साथ 'दान' का भी स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है।[3] इन दानात्मक अभिलेखों का एक संक्षिप्त परिचय निम्नवत है-

ठीमी शिलालेख-

यह शिलालेख नेपाल की राजधानी काठमाण्डू और

भादगांव के मध्य ठीमी नामक ग्राम में है। यह शिलालेख अंशुवर्मा के काल का प्रतीत होता है। इस दानात्मक अभिलेख की भाषा एवं लिपि के तुलनात्मक अध्ययनों के आधार पर इसे इतिहासविद्, अंशुवर्मा कालीन स्वीकार करते हैं।

भूमिदान अभिलेख-

भूमिदान से सम्बधित यह अभिलेख छंगूनारायण मंदिर से प्राप्त हुआ है। यह अभिलेख मंदिर के स्तम्भ के मूल आधार पर उत्कीर्ण पाया गया है। इस अभिलेख की लिपि आंशिक रूप से कुछ नवीन जान पड़ती है। पूर्ववर्ती अभिलेखों में प्रयुक्त लिपि की तुलना में इस अभिलेख की लिपि नवीनता को प्रदर्शित करती है। यह अभिलेख किसी -भाग की स्वीकृति के सम्बन्ध में उत्कीर्ण कराया गया था।

देवपाटन-नागेश्वर शिलालेख-

यह अभिलेख 44 सेंटीमीटर चौड़ाई लिए हुए प्रस्तर पर उत्कीर्ण है, जो शिवलिंग की आधार-शिला पर है। यह शिवलिंग देवपाटन में मृगस्थली के मार्ग में स्थित है। अभिलेख के उत्कीर्ण में संस्कृत व्याकरण पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है।

मंगलबाजार पाटन शिलालेख-

यह लेख एक चबूतरे पर उत्कीर्ण है। यह चबूतरे एक शिलाखण्ड है जो 160 सेटीमीटर चौड़ा है। इस शिलाखण्ड पर दो हिरन एवं दो मानव का अंकन है। दो हिरण के बीच बैठे हुए एवं दो व्यक्तियों द्वारा अर्चित भगवान 'बुद्ध' का चित्र भी अंकित है। यह शिलालेख लिपि और भाषा शैली की दृष्टि से अंशुवर्मा के समय की प्रतीत होती है।

पशुपति रत्नेस्वर स्थापना दानक्षेत्राभिलेख-

दानात्मक संस्कृत अभिलेखों में इस अभिलेख का महत्वपूर्ण स्थान हैं। यह अभिलेख शिवलिंग के अधोभाग में पाया गया है। यह पाषण मूर्ति इन्दलदेवी मंदिर में स्थापित है। वर्तमान में इन्दलदेवी मंदिर नेपाल की राजधानी काठमाण्डू के विशाल नगर में स्थित है। इस शिलालेख में 399 अर्थात 477 की तिथि अंकित है।

शाडरभवन भूमि दानलेख-

पारमाभिमानिनी के पुत्र की भार्या आभीर जाति की गुण विख्यात और अपने पति को ही परमदेवता मानने वाली रानी ने अपने पति की पुण्य के लिए परममाननी पत्नी ने यहाँ से जाते हुए पुण्य दिवस पर धन कोष के दानमान से ब्राह्मणों का अच्छी प्रकार पूजन करके अपने पुत्र की स्वीकृति से अनुपरमेश्वर नामक शंकर भगवान की स्थापना की एवं अनुपरमेश्वर नामक शंभु-भुवन का दान किया। देवों के देव भगवान अनुपरमेश्वर की दैनिक अर्चना एवं स्नानादि के लिए सुर्गंधित धूप, भेंट, प्रसाद, नैवेद्य तथा उसके जीर्णोद्धार के लिए स्थायी रूप से भूमि एवं आभूषणों का दान किया पति देव के स्वर्ग में पुण्यप्राप्ति के लिए पुनीत, आभीर पत्नी ने आयुष्मान भौमगुप्त आदि सन्तान के भोग, आरोग्य और दीर्घायु की प्राप्ति के लिए तिम्पा ग्राम में कमलों से सुशोभित नदी के क्षेत्र में दो खण्ड दिये गये हैं।

संतुगल वनछेदन निषेध शिलालेख-

मानगृह से सबका कल्याण हो। असीमित गुणों के समुदाय के द्वारा प्रकाशित यशवाले, बप्पा के चरणों का ध्यान करने वाले लिच्छविकुल की कीर्ति ध्वजा महाराज शिवदेव कुशलतापूर्वक कान्दुक ग्राम निवासियों, प्रधान मुखियाओं तथा ग्राम कुटुम्बियों से कुशल सम्भाषण करके सूचित करते हैं कि जैसे इस विज्ञप्ति के द्वारा शारदीयधनों से सुशोभित चन्द्रमुख वाले, अपने अपिरिमित बल पराक्रम के द्वारा असंख्य शत्रुओं को शामिल करने वाले, श्रीमहासामन्त अंशुवर्मा के द्वारा आप की अनुकम्पा के द्वारा गौरवपूर्वक मेरे द्वारा यह आज्ञाशिलापट्ट पर लिखकर यह कृपा आप पर की गई है। आप के ग्राम निवासी यहाँ से तोरणादि के पत्ते लेने के लिए सर्वत्र वन-भूमि में जाते हुए और पत्ते लाते हुए मार्ग में फ्रोरनकोट निवासियों द्वारा अथवा अन्यों के द्वारा भी यहाँ दात्री, कैंची से बृक्षादि पर आधान न करे न करवायें। जो इस आज्ञा को न मानकर विपरीत करेगा या करायेगा वह बन्दी बनाया जायेगा और राजा की आज्ञा का अतिक्रमण करने के नियम के द्वारा दंडित होगा। आगे होने वाले राजाओं, धर्मगुरुओं और उनकी कृपा के अनुयायियों के द्वारा भी इस आज्ञा का पालन होना चाहिए।

उपर्युक्त नेपाली दानपरक संस्कृत अभिलेख की ही भाँति भारतीय अभिलेखों में भी दान संबंधी चर्चाएँ प्राप्त होती हैं जो दोनों संस्कृतियों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंध को प्रकाशित करती हैं। सम्राट अशोक के बराबर गुहा लेख जो गुहा दान का आरम्भिक रूप है, में उल्लेख है कि ''बारह वर्ष पूर्व हुए प्रियदर्शी राजा के द्वारा यह न्यग्रोध (नामक) गुफा आजीविकों को दी गयी।''[4] आजीविक एक वैदिकेतर सम्प्रदाय का नाम था। इसके प्रवर्तक मक्खलिगोसाल थे जो बुद्ध के समकालीन थे। इसी तरह के उल्लेख बराबर गुहालेख के द्वितीय एवं तृतीय लेख में भी हैं। द्वितीय लेख में कहा गया है कि द्वादश वर्ष से अभिषिक्त राजा प्रियदर्शी द्वारा खलतिक पर्वत पर यह गुफा आजीविकों को दी गयी।[5] अशोक के समय की बराबर नामक की पहाड़ियाँ खलतिक पर्वत कहलाती हैं। पतंजलि के महाभाष्य में खलतिक पर्वत का उल्लेख है। खारवेल के हाथीगुम्फा लेखमें इसे गोरथगिरी कहा गया है। बराबर गुहा लेख के तृतीय लेख में भी कहा गया है कि ''उन्नीस वर्ष से अभिषिक्त राजा प्रियदर्शी द्वारा वर्षाकाल में निवास के लिए सुप्रिय खलतिक पर्वत पर यह गुफा दी गयी।''[6] अशोक के पौत्र दशरथ के नागार्जुनी गुहालेख, जो संख्या में तीन हैं, दशरथ द्वारा आजीविकों

को गुहादान देने का उल्लेख है। इसमें कहा गया है कि देवों के प्रिय दशरथ ने अभिषेक के बाद ही आजीवक महानुभावों के निवास के लिए, वहियका गुहा, गोपिका गुहा एवं बडथिका गुहा, जब तक चन्द्र और सूर्य है तब तक के लिए दान कर दी।[7] उड़ीसा में उदयगिरी और खंडगिरी की तथा औरंगाबाद के समीप अजंता की गुहाओं से ऐसे गुहादान संबंधी अनेक अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इन अभिलेखों में सम्पूर्ण गुहा अथवा दो या दो से अधिक कोठरियों का दान, चैत्यगुहाओं का दान, सभामण्डप, भोजनशाला अथवा पूजा मण्डप का दान, कुँओं अथवा तालाबों का दान पथ दान, स्तूपदान, प्रतिमा दान, वेदिकादान अथवा पूजा आसन का दान उल्लिखित है।

मथुरा से प्राप्त हुविष्क के प्रस्तर अभिलेख में एक अक्षयनीवि (स्थायी धनराशि जिसके ब्याज से ही व्यय कार्य होता रहे।) के रूप में दान का उल्लेख है। इस अभिलेख में उल्लिखित दान को प्राचीनिक नामक व्यक्ति ने, जो सरूकमाणा का पुत्र और खरासलेन तथा वकन का स्वामी था, ब्राह्मणों को दिया। दानकर्ता ने 550 पुराण (सिक्का) की अक्ष्यनीवि दो श्रेणियों में जमा की थी, जिसके व्याज से प्रतिमाह शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को पुण्यशाला में 100 ब्राह्मणों को भोजन कराने का आदेश दिया। साथ ही प्रतिदिन अनाथ, भूखों और प्यासों के लिए 3 आढ़त सत्तू, एक प्रस्थ लवण, एक प्रस्थ शुक्त, तीन घटक रहित कलापक तथा पांच मल्लक पुण्यशाला के द्वार पर रखने का निर्देश है। इस दान का उद्देश्य शुद्ध पुण्य लाभ है जिसमें दानकर्ता ने हुविष्क की प्रजा तथा सम्पूर्ण मानवमात्र को पुण्य का भागी होने की मंगल कामना की है।[8]

उषावदात के नासिक अभिलेख में भी दान की चर्चा हैं इस अभिलेख में चार धर्मशाला, उद्यान, तालाब, कुएँ, नाव, विश्रामगृह, पौधशालाएँ आदि का निर्माण कराने व तीन सौ सहस्र गायें, सोलह ग्राम, प्रतिवर्ष सौ ब्राह्मणों का भोजन तथा बत्तीस सहस्र नारियल के मूल दान कराने का उल्लेख है।[9] गोन्दो फरनीज के तख्ते-ए-वाही पाषाणलेख में भी श्रद्धादान का उल्लेख है। इसमें कहा गया है कि महाराज गोन्दो फरनीज के (शासन के) 26वें वर्ष में सम्वतसर 103 के बेशाख मास के प्रथम दिन पुण्य शुक्ल पक्ष में बल स्वामी बोयन का वासगृह पुत्र सहित केनमिर बोयन का कुमार के सम्मान में, माता-पिता के सम्मान में श्रद्धादान है।[10] कुछ ताम्रपत्र अभिलेख भी उल्लेखनीय है जिसमें भूमि या गाँव के दान का वर्णन है। जैसे पहाड़पुर ताम्रपत्र अभिलेख, दामोदर गुप्त ताम्रपत्र अभिलेख, प्रभावती गुप्ता का पूना अभिलेख, राष्ट्रकूटों, वल्लभी राजाओं, प्रतिहारों, गहड़वालों तथा चेदियों के दान संबंधी ताम्रपत्र अभिलेख। स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तम्भ लेख में भगवान की मूर्ति तथा गाँव दोनों के पिता के पुण्यार्थ निर्दिष्ट किया गया है।[11] गौतमी वलश्री के नासिक गुहालेख में गौतमी पुत्र सातकर्णी की माता गौतमी बलश्री ने अपने पौत्र वासिष्ठी पुत्र पुलमावयी के शासन के 19वें वर्ष की ग्रीष्म ऋतु के दूसरे पक्ष के 13वें भद्रायणीय सम्प्रदाय के बौद्धभिक्षुओं को नासिक के त्रिरश्मि पर्वत की एक गुहा दान में थी। इस अभिलेख मुख्य विषय गौतमी पुत्र सातकर्णी की उपलब्धियों एवं चरित्र तथा उसकी माता बलश्री द्वारा गुहा आदि दान का वर्णन है।[12]

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि भारत के समान नेपाल में भी दान की परम्परा थी। यह दान धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक प्रयोजनों से किये जाते थे। यह प्रयोजन भारत और नेपाल दोनों देशों में समान रूप से विद्यमान थी। इसकी पुष्टि दोनों देशों के अभिलेखित साक्ष्यों से हो रही है। इससे दोनों देशों की सांस्कृतिक एकता स्पष्ट होती है।

सन्दर्भः-

1. काशी प्रसाद श्रीवास्तव, नेपाल का इतिहास, पृ. 5-6.
2. गैरोला, वाचस्पति, भारत के उत्तरपूर्व सीमान्त देश, पृ. 148.
3. अरविंद अग्रवाल, के. डी., इम्पारटेंस ऑफ नेपाली संस्कृत इन्स्क्रिप्शन्स, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान डीम्ड विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2010, पृ. 11
4. बरावर गुहा लेख संख्या प्रथम।
5. बरावर गुहा लेख संख्या द्वितीय।
6. बरावर गुहा लेख संख्या तृतीय।
7. दशरथ के नागार्जुनीगुहालेख संख्या प्रथम, द्वितीय, तृतीय।
8. हुविष्क का मथुरा प्रस्तर अभिलेख।
9. उषावदात के नासिक अभिलेख।
10. गोन्दोफरनीज का तख्ते-ए-वाही अभिलेख पाषाण।
11. स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भ अभिलेख।
12. गौतभी बलश्री का नासिक गुहालेख।

◆◆◆

संगोष्ठियों में शोध प्रपत्र का वाचन शोधार्थियों एवं शोधविदों के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर है। अपने गुणवत्तापरक शोध कार्य को इन संगोष्ठियों के माध्यम से जनमन के बीच लाएँ।